बचपन

अपनी भी वो हस्ती थी,
बारिश का पानी था,
काग़ज़ की कश्ती थी,
रोशनी थी सपनों की उड़ान में ,
छोटी-छोटी शर्तों में भी क्या मस्ती थी ...!

वो माँ जिसके स्पर्श से
चेहरे खिल जाते थे,
जिनके आँचल में हम छुप जाते थे,
रोना भी आता तो चुप वो कराती थी,
रुठ भी जायें तो फिर से वो मनाती थी ...!

दुख, दर्द, प्रेम, मोह,
हमको कुछ समझ न नहीं आता था,
जो प्यार से देखले वो ही भा जाता था!!

आज जब बचपन की न की वो कहानी नहीं, बात वो पुरानी नहीं ...!

देखती हूँ आज जब बच्चों का लड़कपन,
याद आता है मुझे मेरा बचपन,
वो बचपन का ज़माना था,
जिसमें ख़ुशियों का ख़ज़ाना था ...!

खिलौनों से क्यूँ दूर हो गए हम
ना जाने कहाँ खो गए हम ?
कंधों पर बोझ इतना बढ़ गया ,
की हम वो बचपन ही भूल गए ,
इस राह में वो मंज़िल भी भूल गए ...!

छोटी सी बात पर लड़ते थे,
झूलों से गिरकर फिर चढ़ते थे,
वक़्त की रफ़्तार में वो पल कहाँ खो गए ?
आज अपने अंदर ख़ुद ही रो गए ...!

आज सोचती हूँ मैं यहाँ,
क्या मुमकिन है उन पलों को वापिस लाना ?
क्या मुमकिन है वो मेरा मुस्कुराना ?

आज ना तो वो कहानी है
आज ना तो वो कश्ती
सोचती हूँ, कहाँ गए वो वो दिन ?
कहाँ गयी वो मस्ती !?

- Reema, 1st Year